

100 पौधों को तैयार करने हेतु 350 से 400 ग्राम बीज की आवश्यकता होगी।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

बीज को बुवाई के लिए क्यारी के स्थान पर जर्मिनेशन ट्रे का प्रयोग करना चाहिए। जिसमें बारीक महीन रेत भरकर 02 से.मी. की गहराई में बीज की बुवाई कर बीज से बीज की दूरी 03 से.मी. रखना चाहिए। बुवाई पूर्व बीज को ऊपर दी हुई विधि से उपचारित कर ही प्रयोग में लाना चाहिए जिससे अधिक अंकुरण प्राप्त हो सके। बुवाई के पश्चात् दिन में एक बार सिंचाई करना अत्यंत आवश्यक होता है। जर्मिनेशन ट्रे में एक माह के पौधे होने के पश्चात् ही पॉलिथिन बैग में स्थानांतरित करना चाहिए।

रोपणी अवस्था में बीमारी एवं बचाव

रोपणी अवस्था में कीट का प्रकोप देखे जाने पर इसमें क्लोरोपायरीफॉस या एंडोसल्फॉन के 01 प्रतिशत सांद्रता के घोल का छिड़काव आवश्यकता के अनुरूप किये जाने पर कीट के प्रकोप से रोकथाम की जा सकती है।

पॉटिंग मिश्रण

रेत+मिट्टी+ गोबर खाद को समान मात्रा में लेकर उसमें 60 ग्राम राईजोबियम (जैविक खाद) मिलाकर पौध रोपण किया जाना चाहिए।

पॉलीथिन का माप

रोपण हेतु पॉलिथिन का माप 20 x 30 सेमी होना चाहिए।

उपयोग

यह वृक्ष औषधीय एवं व्यवसायिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी होता है। इसकी पत्तियों का उपयोग दोना-पत्तल बनाने में किया जाता है। इस वृक्ष के रेशे बीड़ी के बंडल बांधने में उपयोग किए जाते हैं। इसकी जड़ों का उपयोग तपेदिक के रोग के साथ-साथ आंत्रशोथ एवं बुखार में किया जाता है। कुछ जगहों पर इसकी जड़ को दातून के रूप में पायरिया की रोकथाम के लिए किया जाता है। इसके साथ ही इसकी छाल एवं बीज का उपयोग त्वचा रोग, डायरिया, फोडे-फुंसी, मसा, आदि के उपचार हेतु तैयार की जाने वाली औषधि में किया जाता है।

अन्य

माहुल पत्ता ग्रामीणों का एक आय का मुख्य स्रोत है इसके साथ ही औषधीय दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी होने के कारण भविष्य में इसके वृक्षारोपण को किया जाकर आय के साधन को बढ़ाया जा सकता है।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

(0761) 2666529, 2665540

माहुल

बीज एवं रोपणी तकनीक

(बहुनिया वहलाई)



बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

माहुल-बीज एवं रोपणी तकनीक

प्रजाति का नाम
वानस्पतिक नाम

माहुल
बहुनिया वहलाई

परिचय

यह सिसिलपीनिएसी कुल का वृक्ष है। जो कि बेला की तरह सहारा लेकर वृद्धि करता है।

पहचान

यह बेल की तरह रेंगने वाला बहुवर्षी वृक्ष है। यह करीब 10 से 30 मीटर लंबा होता है। इसकी शाखाओं में लोहे में लगने वाली जंग के समान बारीक बाल को देखकर पहचाना जा सकता है। इसकी शाखाएं जोड़े में कुण्डल के समान मुड़कर आगे की तरफ बढ़ती हैं। इसकी पत्तियां 10 से 45 सेमी. लंबी एवं दो भागों में बड़े कटाव के साथ बंटी हुई होती हैं। इसके फूल 2 से 3 सेमी. बड़े सफेद पीले रंग के गोलाकार झुंड में होते हैं एवं इसके फल कठोर 20 से 30 सेमी. लंबे फली के आकार में एवं 5 से 7 सेमी. चौड़े होते हैं जिसमें 6 से 12 बीज पाये जाते हैं। बीजों का आकार 1.5 से 2.5 सेमी चौड़ा एवं 2.5 से 3.2 सेमी. लंबा होता है।

प्राप्ति स्थान

यह संपूर्ण भारत में पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है परंतु मुख्य रूप से यह कश्मीर से सिक्किम तक 1500 मीटर की ऊँचाई पर पाया जाता है। मध्य प्रदेश में यह डिण्डौरी, अनूपपुर, मण्डला, होशंगाबाद आदि जिलों में पाया जाता है। इस प्रजाति में पुनरोत्पादन की क्षमता कम

होने के साथ साथ विनाशविहीन विदोहन होने के कारण आई.यू.सी.एन. की सूची में इसे क्षेत्रीय स्तर पर (VU) विलुप्त होने की श्रेणी में रखा गया है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

इस वृक्ष की वृद्धि के लिए किसी विशेष प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता नहीं होती। यह क्षारीय एवं अम्लीय दोनों प्रकार की दोमट बलुई मिट्टी में अच्छी तरह से वृद्धि करता है।

बीज चक्र

इसमें एक वर्ष के अंतराल पर अच्छा बीज उत्पादित होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

इस वृक्ष में फूल अप्रैल से जून के मध्य एवं फल जनवरी से मार्च के मध्य लगते हैं। बीज का संग्रहण माह फरवरी से मार्च के मध्य किया जाना उपयुक्त होता है।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रति किलो बीज की संख्या 800 से 850 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज की जीवन क्षमता अवधि 01 वर्ष तक होती है।

सुसुप्तावस्था

इसके बीजों में किसी भी तरह की सुसुप्तावस्था नहीं पायी जाती है।

अंकुरण क्षमता

सामान्य स्थिति में बीज में अंकुरण क्षमता 60 से 65 प्रतिशत तक होती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशत 50 से 55 प्रतिशत तक होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

कम तापमान अर्थात् 4 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान पर भण्डारित करने पर बीज की अंकुरण क्षमता 50 से 52 प्रतिशत तक 15 माह के भण्डारण के उपरांत पायी गई जो कि सामान्य भण्डारण की स्थिति में 15 से 16 प्रतिशत तक देखी गई इसी तरह दो वर्ष पश्चात् बीज में साधारण भण्डारण की स्थिति में बीज में अंकुरण शून्य पाया गया जबकि 4 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान पर भण्डारित करने पर 25 प्रतिशत तक अंकुरण क्षमता देखी गई।

उपयोगिता की अवधि

बीजों को 12 से 15 माह के अवधि के अंदर उपयोग किया जाना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

बुवाई के पूर्व 05 प्रतिशत सांद्रता के सल्फ्यूरिक अम्ल के घोल में 10 मिनट डुबोकर रखने के पश्चात् पानी से धोकर बुवाई करने पर अंकुरण क्षमता अनुपचारित बीज की तुलना में 25 से 30 प्रतिशत अधिक पायी गई।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

अधिक अंकुरण प्राप्त करने हेतु बीज की बुवाई बारीक रेत में करना चाहिए।

बुआई का समय

बीज की बुआई मार्च-अप्रैल के मध्य की जाना चाहिए।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा